प्राचीन भारतीय ज्ञान सार

वी. के. जैन

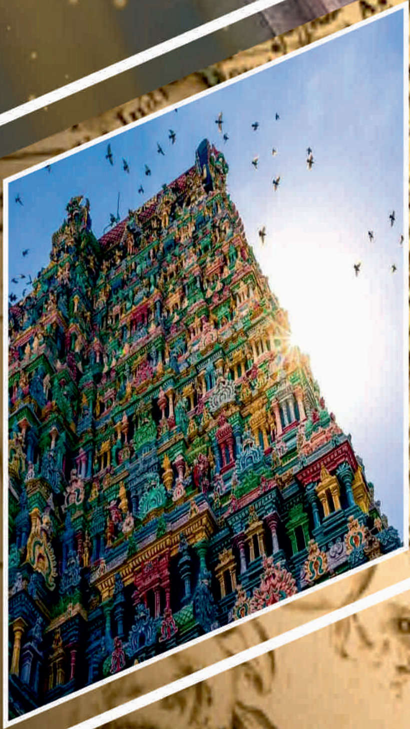

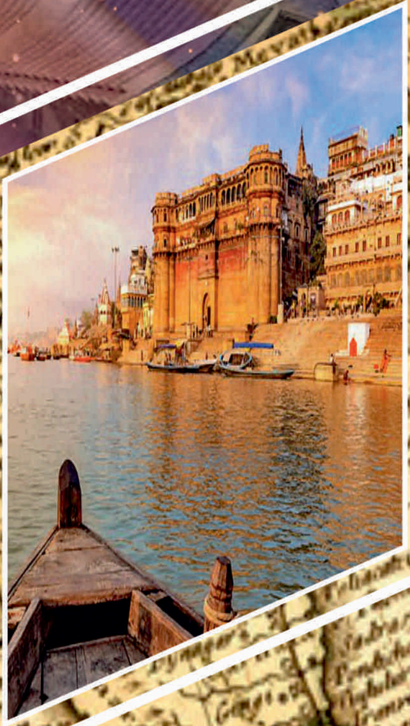

KHANNA PUBLISHERS®
Investing in Learning®

प्राचीन भारतीय ज्ञान सार

वी. के. जैन

प्राध्यापक, लेखक तथा चार्टर्ड इंजीनियर

B.E., M.Tech, FIE, FIETE,

Affiliate Member ISHRAE, Expert AICTE

KHANNA PUBLISHERS®

Investing in Learning®

Operational Office :

4575/15, Onkar House, Opp. Happy School,

Ground Floor, Daryaganj, New Delhi 110 002

Phones : 011-45033819 • *Mob.* 09811541460

email : contactus@khannapublishers.in

Published by :

Romesh Chander Khanna & Vineet Khanna
for **KHANNA PUBLISHERS**
2-B, Nath Market, Nai Sarak,
Delhi-110006 (India)

Visit us at : www.khannapublishers.in

Copyright : Publisher and Author Jointly

© 1979 and onward.
This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form without the written permission of both Authors and the Publisher. The right to translation, however, reserved with the Authors alone.

Hologram & Description

To all readers of our books, to prevent yourself from being defrauded by pirated books. Please make sure that there is an Hologram on the cover of our books with the below specifications. If you find any book without the Hologram or Description, please mail us at **contactus@khannapublishers.in.**

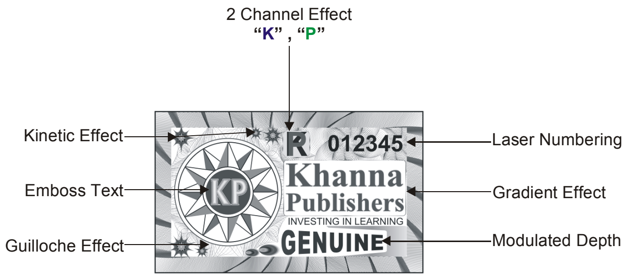

ISBN No. 978-93-92549-16-8

***First Edition:* 2022**

प्राक्कथन

मेरे शैक्षणिक जीवन की शुरुआत इटारसी शहर के कॉन्वेंट स्कूल से हुई। उस दौरान स्कूल के मूल्यांकन हेतु आई हुई कमेटी ने मुझे वहां के प्रिंसिपल और चर्च के पादरी से मिलने के लिए चुना। जब मैं इनसे मिलकर वापस आया तब मेरी इटारसी वाली नानी ने पूछा की वहां पर चाय के साथ और क्या खा कर आए हो। यह बताने के पश्चात कि मैं वहां पर केक खा कर आया हूँ उन्होंने मुझे उस स्कूल से निकलवा कर नगरपालिका के स्कूल में दाखिल करवा दिया। बचपन में मैं जैन मंदिर और प्रसाद लेने के लिए पास के राम मंदिर में जाता रहा। इन सभी गतिविधियों के और अपने माता-पिता के कारण मैं अत्यंत संस्कारवादी बन गया।

जब मैं नवीं क्लास में था उस वक्त मेरे पिताजी ने सस्ता साहित्य मण्डल की वीर सावरकर एवं शहीद भगत सिंह की जीवनी की पुस्तकें मुझे पढ़ने को दी थी। ये दोनों व्यक्ति तथा कथित रूप से नास्तिक माने गए हैं। इनको पढ़कर मैं आस्तिकता एवं नास्तिकता के बीच में मंथन करने लगा। इन विचारों ने मुझे संस्कृत के अध्ययन के लिए बाध्य किया। भारतीय विद्या भवन के द्वारा संचालित परीक्षाएं पास की। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में तीन वर्ष तक संस्कृत पढ़ना अनिवार्य था। उस वक्त मन में यह भावना प्रबल हुई की मैं प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराओं तथा वेदों का गहन अध्ययन करूं। ये अभिलाषा मन में दबी रही।

कालान्तर में जब मेरी कंप्यूटर विज्ञान की भारत वर्ष की प्रथम पुस्तक "आधुनिक कंप्यूटर विज्ञान" का विमोचन आदरणीय श्री शंकर दयाल शर्मा जी (तत्कालीन उपराष्ट्रपति) के कर-कमलों द्वारा हुआ तो उन्होंने मुझे हिंदी और संस्कृतमय पुस्तकें लिखने के लिए प्रेरित किया।

मैं खन्ना पब्लिशर्स का अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे प्राचीन भारतीय परंपराओं पर आधारित, चार वेदों तथा उपवेदों, छह उपांग एवं 18 पुराणों की व्याख्या करते हुए पुस्तक लिखने का अवसर दिया, विशेषकर मैं श्री कृतु खन्ना, अक्षिता खट्टर, एवं उनके संपादक किशन वर्मा का आभारी हूँ।

हजारों वर्षों से भारतीय संस्कृति पर यवनों, तुर्कों, मुगलों, फ्रांसीसी, पुर्तगाली एवं ईस्ट इंडिया कंपनी और अंग्रेजों के द्वारा प्रहार किया जाता रहा है लेकिन हम विचलित नहीं हुए और विश्व में अपनी ख्याति उपार्जित करते रहे, यह प्राचीन भारतीय परंपराओं का असर है। अतएव यह उचित ही है की वर्तमान भारतीय सरकार ने इस विषय पर ध्यान दिया एवं पुस्तक लिखने के लिए आधार प्रदान किया।

भारतीय विद्यार्थियों के लिए प्रस्तुत की गई यह पुस्तक समस्त तकनीकी विद्यालयों में प्रथम वर्ष में पढ़ाई जाएगी। पुस्तक हिंदी में लिखी गई है और जहाँ-जहाँ भी उपरोक्त शास्त्रों में संस्कृत के श्लोकों का प्रयोग हुआ है उनका हिंदी में भावार्थ दिया गया है। मेरी अभिलाषा है कि भारत की स्नातक योग्य वर्तमान पीढ़ी इस ग्रंथ को श्रद्धापूर्वक पढ़कर अपने प्राचीन गौरव को समुचित रूप से समझ सकेगी और अपने जीवन में इसे आत्मसात करेगी। **तथास्तु!**

इंजीनियर वीरेन्द्र कुमार जैन
प्राध्यापक, लेखक तथा चार्टर्ड इंजीनियर
B.E., M.Tech, FIE, FIETE, Affiliate Member ISHRAE, Expert AICTE
28 फरवरी, 2022 सोमवार—फाल्गुन कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, विक्रम संवत् 2078
शक संवत (भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर): फाल्गुन 9, 1943

अनुक्रमणिका

अध्याय 1 प्राचीन भारतीय ज्ञान सार **1**

1.1. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराएँ 1

1.2. हिंदू धर्म 2

1.3. प्रथम चरण 3300–1300 ईसा पूर्व: मोहन जोदड़ो और हड़प्पा सभ्यता 2

1.3.1. प्राग हड़प्पा या पूर्व हड़प्पा या प्रारम्भिक हड़प्पा संस्कृति 4

1.3.2. कृषि एवं पशु-पालन 5

1.3.3. उद्योग-धंधे 5

1.3.4. व्यापार 6

1.3.5. सैंधव सभ्यता में अध्यात्म एवं धर्म 7

1.3.6. हड़प्पा का पतन एवं विनाश 9

1.3.7. हड़प्पा संस्कृति की विशेषताएँ 10

1.3.8. हड़प्पा के अतिरिक्त उत्खनित अन्य स्थल 10

1.4. द्वितीय चरण: प्रारंभिक एवं उत्तर वैदिक काल: 1500 ईसा पूर्व से लेकर 500 ईसा पूर्व 10

1.5. तृतीय चरण: उपनिषद एवं पुनर्जागरण काल (1000 ईसा पूर्व से 300 ईसा पूर्व) 12

1.6. चतुर्थ चरण: पौराणिक काल (400 ईसा पूर्व से 300 ईसा पूर्व) 12

1.6.1. महाभारत 13

1.6.2. सरस्वती नदी 13

1.7. पंचम चरण: भक्ति आंदोलन (ईसा पश्चात 1350 से 1650 वर्ष) 15

1.8. छठवां चरण: यूरोपीय शक्ति का प्रादुर्भाव (ईसा पश्चात 300 से 500 वर्ष) 16

1.9. सप्तम चरण: 1947 में अंग्रेजों से मिली आजादी के बाद से अब तक 17

1.10. प्राचीन भारतीय ज्ञान परिचय 17

1.11. संस्कृत 17

1.11.1. ध्वनि-तन्त्र और लिपि 18

1.11.2. संस्कृत भाषा की विशेषताएँ 18

1.12. प्राकृत साहित्य 20

1.13. भारतीय अध्यात्म विद्या 21

1.13.1. पूर्ववैदिक ऋग्वैदिक काल 1500–1000 ई.पू. 22

1.13.2. उत्तर वैदिक काल (1000–600 ई.पू.) 22

	1.14.	भारतीय अध्यात्म विद्या		23
		1.14.1. वैदिक संहिताएँ		23
	1.15.	वेदों का इतिहास		23
		1.15.1. समय रेखा		23
	1.16.	समस्त वेदों के पाठन रचना के प्रकार		27
		1.16.1. संहिता		28
		1.16.2. ब्राह्मण (भजनों पर टिप्पणियाँ)		29
		1.16.3. आरण्यक		29
		1.16.4. उपनिषद		30
			1.16.4.1. ऋग्वेद के उपनिषद	31
			1.16.4.2. शुक्ल यजुर्वेद के उपनिषद	31
			1.16.4.3. कृष्ण यजुर्वेद के उपनिषद	32
			1.16.4.4. सामवेद के उपनिषद	32
			1.16.4.5. अर्थवेद के उपनिषद	32
	1.17.	वेदांग		34
अध्याय 2	**ऋग्वेद**			**35**
	2.1.	ऋग्वेद परिचय		35
	2.2.	ऋग्वेद		35
	2.3.	ऋग्वेद का प्रथम श्लोक		37
	2.4.	ऋग्वेद के संस्करण		38
	2.5.	ऋग्वेद की विभिन्न पांडुलिपियों में अंतर		39
	2.6.	ऋग्वेद संहिता के 10 मण्डल		39
	2.7.	ऋग्वेदपाठ के पांच मुख्य उपभाग		41
		2.7.1. ऋग्वेद-संहिता के सूक्तों का संक्षिप्त परिचय		41
	2.8.	ऋग्वेद-संबंधित ब्राह्मण ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय		43
		2.8.1. ऐतरेय ब्राह्मण		44
		2.8.2. शांखायन ब्राह्मण		45
			2.8.2.1. शांखायन ब्राह्मण की विषय-निरूपण-शैली	45
			2.8.2.2. शांखायन ब्राह्मण में आचार-मीमांसा	45
	2.9.	संपूर्ण विश्व में ऋग्वेद के विभिन्न अनुवाद		46
	2.10.	ऋग्वेद का रचना काल		47
	2.11.	कुरु संघ		48
	2.12.	मृत्युंजय तथा गायत्री मंत्र		48
	2.13.	ऋग्वेद में समाहित काव्य छंद (मीट्रिक)		49
	2.14.	सामाजिक व्यवस्था		50
	2.15.	ऋग्वैदिक राजनीतिक अवस्था और राजनीतिक संगठन		52

अध्याय 1

प्राचीन भारतीय ज्ञान सार

1.1. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराएँ

ज्ञान का अर्थ मानवीय मूल्यों के अनुरूप चिंतन करना और चरित्र के लिए आस्थावान बनना है। कहते हैं कि मनुष्य में जन्मजात पशु प्रवृत्तियाँ भरी होती हैं, लेकिन इन अवगुणों का नाश करके संस्कारी और आदर्शवादी बनाने की चिंतन प्रक्रिया को ज्ञान कहा गया है।

विज्ञान का सीधा-सा अर्थ है—वस्तुओं की तमाम जानकारी हासिल करना। भौतिक उपलब्धियां विज्ञान का सच नहीं हैं, आत्म तत्व ही विज्ञान का सच है। विज्ञान ने अब तक प्रकृति के अनेक रहस्य खोज निकाले हैं, लेकिन वर्तमान में वह विनाश और पतन की सामग्री जुटाने में लीन है।

प्राचीन भारतीय विज्ञान तथा तकनीक को जानने के लिए प्राचीन साहित्य और पुरातत्व का सहारा लेना पड़ता है। प्राचीन भारत का साहित्य अत्यन्त विपुल एवं विविधता सम्पन्न है। इसमें *धर्म, दर्शन, भाषा, शिक्षा आदि के अतिरिक्त गणित, ज्योतिष, सैन्य विज्ञान, आयुर्वेद, रसायन, धातुकर्म,* आदि भी वर्ण्यविषय रहे हैं।[1]

वैदिक काल से ही भारत में विज्ञान के अनेक क्षेत्र विकसित थे। *भौतिकी रसायन, वनस्पति शास्त्र, कृषि, गणित, नक्षत्रविज्ञान, जीवविज्ञान, आयुर्वेद, धातुविज्ञान, और विभिन्न कला कौशल* भी अध्ययन व प्रयोग का क्षेत्र था। जब वेद, उपनिशद्, आदि प्राचीन ग्रंथों में वर्णित कुछ घटनाएं वैज्ञानिक विकास का आभास देती हैं।

वैदिक या हिंदू धर्म को इसलिए सनातन धर्म कहा जाता है, क्योंकि यही एकमात्र धर्म है जो ईश्वर, आत्मा और मोक्ष को तत्व और ध्यान से जानने का मार्ग बताता है। यह भी सत्य है कि हिंदू नाम तो विदेशियों ने दिया। यह शब्द वेदों और शास्त्रों में कहीं भी नहीं पाया जाता है।

सनातन धर्म के मूल तत्व—*सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा, दान, जप, तप, यम-नियम* आदि हैं, जिनका शाश्वत महत्त्व है। अन्य प्रमुख धर्मों के उदय के पूर्व वेदों में इन सिद्धांतों को प्रतिपादित कर दिया गया था।

वृहदारण्य उपनिषद में कहा गया है:

॥ॐ॥ असतो मा सदगमय, तमसो मा ज्योर्तिगमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय॥—वृहदारण्य उपनिषद

भावार्थ: अर्थात् हे ईश्वर मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से अमृत की ओर ले चलो।

1.2. हिंदू धर्म

हिंदू धर्म या हिंदू पन्थ (संस्कृत: धर्म) एक धर्म (या, जीवन पद्धति) है, जिसके अनुयायी अधिकांशत: भारत, नेपाल और मॉरिशस में बहुमत में हैं, इसके अतिरिक्त सूरीनाम, फिजी इत्यादि। इसे विश्व का प्राचीनतम धर्म माना जाता है। इसे 'वैदिक सनातन वर्णाश्रम धर्म' भी कहते हैं, जिसका अर्थ है कि इसकी उत्पत्ति मानव की उत्पत्ति से भी पहले से है। विद्वान लोग हिंदू पन्थ को भारत की विभिन्न संस्कृतियों एवं परम्पराओं का सम्मिश्रण मानते हैं जिसका कोई संस्थापक नहीं है।

हिंदू धर्म वेदों पर आधारित धर्म है। वेदों से ही स्मृति और पुराणों की उत्पत्ति हुई है। वेदों के सार को उपनिषद और उपनिषदों के सार को ***गीता*** *कहते हैं।* **मोक्ष** एक दार्शनिक शब्द है जो *जैन, हिंदू, बौद्ध,* तथा *सिख* धर्मों में प्रमुखता से आता है। शास्त्रों और पुराणों के अनुसार, जीव का जन्म और मरण के बन्धन से छूट जाना ही *मोक्ष* है। हालांकि अधिकतर लोग व्यक्तिगत रूप से मानते हैं कि दु:ख का आत्यंतिक नाश ही *मुक्ति* या *मोक्ष* है, जैसा की न्याय दर्शन शास्त्र में कहा गया है।

एकनिष्ठता, ध्यान, मौन और तप सहित यम-नियम के अभ्यास और जागरण का मोक्ष मार्ग है अन्य कोई मोक्ष का मार्ग नहीं है। पुरातत्व विज्ञान के गहन अध्ययन करने के पश्चात हमें ये ज्ञात होता है की सनातन धर्म (जिसे आजकल अधिकतर हिंदू धर्म भी कहा जाता है) लगभग 5000 वर्षों से व्यवस्थित विकसित हुआ है; हालांकि कुछ विद्वान इसे 7,000 वर्ष से अधिक पुराना बताते हैं। प्राचीन ज्ञान और विज्ञान का निम्नलिखित सात चरणों में अध्ययन किया जा सकता है:

1. **प्रथम चरण:** ईसा पूर्व: मोहनजोदड़ो और हड़प्पा सभ्यता (3300 ईसा पूर्व से लेकर 1300 ईसा पूर्व)
2. **द्वितीय चरण:** प्रारंभिक एवं उत्तर वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व से लेकर 500 ईसा पूर्व)
3. **तृतीय चरण:** उपनिषद एवं पुनर्जागरण काल (1000 ईसा पूर्व से 300 ईसा पूर्व)
4. **चतुर्थ चरण:** पौराणिक काल (400 ईसा पूर्व से 300 ईसा पूर्व)
5. **पंचम चरण:** भक्ति आंदोलन (ईसा पश्चात 1350 से 1650 वर्ष)
6. **छठवां चरण:** यूरोपीय शक्ति का प्रादुर्भाव (ईसा पश्चात 300 से 500 वर्ष)
7. **सप्तम चरण:** आजादी के बाद निवर्तमान

1.3. प्रथम चरण 3300–1300 ईसा पूर्व: मोहनजोदड़ो और हड़प्पा सभ्यता

लगभग 5,000 वर्ष पूर्व (पूर्व हड़प्पा काल: 3300–2500 ईसा पूर्व, परिपक्व काल: 2600–1900 ईसा पूर्व या मध्य कांस्य युग तथा उत्तरार्ध हड़प्पा काल: 1900–1300 ईसा पूर्व), कांस्य युग में,[1] मानव सभ्यता का सर्वप्रथम विकास हुआ जिसमें स्थायी रूप से बसने का प्रयास किया गया। टिंगरिस व यूफेंटीस नदी घाटी में, चीन की हंवागहो नदी घाटी में और भूमध्य सागर और एशियन सागर के सीमावर्ती क्षेत्रों में कई सभ्यताओं का विकास हुआ। लगभग इसी समय सिंधु घाटी भी एक विकासशील सभ्यता का केंद्र थी। इस काल की विशेषता ईंट से बनाए गए शहर थे। सिंधु घाटी सभ्यता, विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में से एक प्रमुख सभ्यता है। जो मुख्य रूप से दक्षिण एशिया के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में, जो आज तक उत्तर पूर्व अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम और उत्तर भारत में फैली थी। इस सभ्यता के लिए साधारणत: तीन नामों का प्रयोग होता है—*सिंधु सभ्यता, सिंधु घाटी की सभ्यता* (संेधव सभ्यता) और *हड़प्पा सभ्यता।* इन तीनों शब्दों का एक ही अर्थ है। इनमें से प्रत्येक शब्द की एक विशिष्ट पृष्ठभूमि है।

आज से लगभग 100 वर्ष पहले (2021 से) वैज्ञानिकों एवं विद्वानों का मानना था कि मानव सभ्यता का आविर्भाव आर्यों से हुआ। लेकिन सिंधु घाटी के साक्ष्यों के बाद उनका भ्रम दूर हो गया और उन्हें यह स्वीकारना पड़ा कि आर्यों के आगमन से वर्षों पूर्व ही प्राचीन भारत की सभ्यता पल्लवित हो चुकी थी। इस सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता या सेंधव सभ्यता नाम दिया गया।

सिंधु घाटी में मोहनजोदड़ो और हड़प्पा ताम्र कांस्युगीन सभ्यता के प्रमुख केंद्र थे। दुनिया की सबसे प्राचीनतम नगरीय व्यवस्था माने जाने वाले प्राचीन शहर मोहनजोदड़ो पर अभी फिलहाल नष्ट होने का ख़तरा मंडरा रहा है।

मोहनजोदड़ो पाकिस्तान के सिंध प्रात में सिंधु नदी के किनारे बसे करीब चार हजार वर्ष पुराने इस शहर की खोज अभी महज 100 वर्ष पहले ही हुई थी।

यह दुनिया के प्रचीनतम सभ्यताओं में से एक सिंधु घाटी सभ्यता का एक प्रमुख शहर रहा है। मोहनजोदड़ो का अर्थ होता है—'मुर्दों का टीला'।

मोहनजोदड़ो योजनाबद्ध तरीके से बनाया गया एक शानदार शहर था जिसमें अविश्वसनीय तरीके से सारी सुख-सुविधाएं मौजूद थी। यहां बने घरों में पक्की ईंटों से बने स्नानघर और शौचालय थे। मोहनजोदड़ो को हड़प्पा सभ्यता का सबसे बड़ा शहरी केंद्र माना जाता है। इस सभ्यता की नगर-योजना, गृह निर्माण, मुद्रा, मोहरों आदि की अधिकांश जानकारी मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई हैं। यह नगर दो भागों में विभाजित था—एक छोटा लेकिन ऊँचाई पर बनाया गया और दूसरा कहीं अधिक बड़ा लेकिन नीचे बनाया गया।

मोहनजोदड़ो की दैव-मार्ग (Divinity Street) नामक गली में करीब यह 11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर प्रसिद्ध जल कुंड है। इस जल कुंड के विषय में हम अध्याय 10.3 में विस्तारपूर्वक पढ़ेंगे।

इस सभ्यता की सबसे विशेष बात थी यहां की विकसित नगर निर्माण योजना। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो दोनों नगरों के अपने दुर्ग थे जहाँ शासक वर्ग का परिवार रहता था। प्रत्येक नगर में दुर्ग के बाहर एक उससे निम्न स्तर का शहर था, जहाँ ईंटों के मकानों में सामान्य लोग रहते थे। इन नगर भवनों के बारे में विशेष बात ये थी कि ये एक आयताकार ग्रिड (जाल) की तरह विन्यस्त थे। अर्थात् सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं और नगर अनेक आयताकार खंडों में विभक्त हो जाता था। ये बात सभी सिंधु बस्तियों पर लागू होती थीं चाहे वे छोटी हों या बड़ी। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो के भवन बड़े होते थे। वहाँ के स्मारक इस बात के प्रमाण हैं कि वहाँ के शासक मजदूर जुटाने और कर-संग्रह में परम कुशल थे। ईंटों की बड़ी-बड़ी इमारत देख कर सामान्य लोगों को भी यह लगेगा कि ये शासक कितने प्रतापी और प्रतिष्ठावान थे।

हड़प्पा में पक्की मिट्टी की स्त्री मूर्तिकाएँ भारी संख्या में मिली हैं। एक मूर्ति में स्त्री के गर्भ से निकलता एक पौधा दर्शाया गया है। विद्वानों के मत में यह पृथ्वी देवी की प्रतिमा है और इसका निकट संबंध पौधों के जन्म और वृद्धि से रहा होगा। इसलिए मालूम होता है कि यहां के लोग धरती को उर्वरता की देवी समझते थे और इसकी पूजा उसी तरह करते थे जिस तरह मिस्र के लोग नील नदी की देवी आइसिस् की। कुछ विद्वान मानते हैं कि हिंदू धर्म द्रविडों का मूल धर्म था और शिव द्रविडों के देवता थे जिन्हें आर्यों ने अपना लिया।

दूसरा शहर हड़प्पा साहिवाल शहर से 20 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। सिंधु घाटी सभ्यता के अनेकों अवशेष यहां से प्राप्त हुए हैं। सिंधु घाटी सभ्यता को इसी शहर के नाम के कारण हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है। सन् 1921 में जब जॉन मार्शल भारत के पुरातात्विक विभाग के निर्देशक थे तब "दयाराम साहनी" नामक व्यक्ति ने इस स्थान पर सर्वप्रथम खुदाई का कार्य करवाया था।

प्रारंभ में वर्ष 1921 में जब पश्चिमी पंजाब के हड़प्पा स्थल पर इस सभ्यता का पता चला और अगले ही वर्ष एक अन्य प्रमुख स्थल मोजनजोदड़ो की खोज हुई, तब यह सोचा गया कि यह सभ्यता अनिवार्यत: सिंधु घाटी तक सीमित थी। अत: इस सभ्यता का संकेत देने के लिए सिंधु घाटी की सभ्यता शब्दावली का प्रयोग प्रारंभ हुआ। परंतु बाद के वर्षों के अनुसंधान से जब यह प्रमाणित हो गया कि यह सभ्यता स्वयं सिंधु घाटी की सीमाओं के पार दूर-दूर तक फैली थी, तब इस सभ्यता के सही-सही भौगोलिक विस्तार का संकेत देने के लिए शब्दावली अपर्याप्त सिद्ध हुई। अत: हड़प्पा स्थल के

नाम पर जहाँ शुरू-शुरू में इस सभ्यता को पहचाना गया था, स्वयं इस सभ्यता का नामकरण कर दिया गया। हड़प्पा[2] के अवशेष इस सभ्यता के प्रमुख केंद्र थे।

हड़प्पा के कोठारों के दक्षिण में खुला फर्श है और इस पर दो कतारों में ईंट के वृत्ताकार चबूतरे बने हुए हैं। फर्श की दरारों में गेहूँ और जौ के दाने मिले हैं। इससे प्रतीत होता है कि इन चबूतरों पर फसल की दवनी होती थी। हड़प्पा में दो कमरों वाले बैरक भी मिले हैं जो शायद मजदूरों के रहने के लिए बने थे। कालीबंगा में भी नगर के दक्षिण भाग में ईंटों के चबूतरे बने हैं जो शायद कोठारों के लिए बने होंगे। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि कोठार हड़प्पा संस्कृति के अभिन्न अंग थे।

1.3.1. प्राग हड़प्पा या पूर्व हड़प्पा या प्रारम्भिक हड़प्पा संस्कृति

हड़प्पा के अवशेष इस सभ्यता के विकसित और परिष्कृत रूप को प्रकट करते हैं। परन्तु हड़प्पा संस्कृति का विकास अचानक तथा पृथक रूप से नहीं हुआ था। पश्चिमोत्तर सीमान्त प्रदेश, बलूचिस्तान, सिंधु एवं राजस्थान से प्राप्त अवशेषों से ज्ञात होता है कि सिंधु घाटी सभ्यता के विकास के पूर्व भारतीय उपमहाद्वीप में एक ऐसी संस्कृति विद्यमान थी, जिसे हम सिंधु घाटी सभ्यता की पूर्ववर्ती संस्कृति मान सकते हैं। इस संस्कृति को 'प्राग हड़प्पा' या पूर्व हड़प्पा या प्रारम्भिक हड़प्पा संस्कृति की संज्ञा दी गयी है। एक बर्तन पर बना मछुआरे का चित्र, शंख का बना बैल, स्त्री के गर्भ से निकला पौधा, पीतल की बनी इक्का गाड़ी, गेहूँ तथा जौ के दाने, ईंटों के बने वृताकार चबूतरे आदि महत्त्वपूर्ण साक्ष्य हैं।

हड़प्पा वासी सुनियोजित नगरों में रहते थे और लेखन कला का विकास कर चुके थे। दुर्भाग्यवश हम अभी तक इस लिपि का अर्थ नहीं निकाल सके हैं। हड़प्पा सभ्यता के लोग कृषि और वास्तुकला के क्षेत्र में भी निपुण थे। हड़प्पा से प्राप्त दो टीलों में पूर्वी टीले को नगर टीला तथा पश्चिमी टीले को दुर्ग टीला कहा गया है। हड़प्पा के उत्खनन से एक पूर्ण नियोजित नगर के पूर्व में होने के प्रमाण मिले हैं। यह नगर ऊपरी एवं निचले दो भागों में विभक्त था।

चित्र 1.1. मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा संस्कृति का विस्तार क्षेत्र

इस परिपक्व सभ्यता का केंद्र-स्थल पंजाब तथा सिन्ध में था। तत्पश्चात इसका विस्तार दक्षिण और पूर्व की दिशा में हुआ। इस प्रकार हड़प्पा संस्कृति के अन्तर्गत पंजाब, सिन्ध और बलूचिस्तान के भाग ही नहीं, बल्कि गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सीमान्त भाग भी थे। इसका फैलाव उत्तर में माण्डा में चेनाब नदी के तट से लेकर दक्षिण में दैमाबाद (महाराष्ट्र) तक और पश्चिम में बलूचिस्तान के मकरान समुद्र तट के सुत्कागेनडोर पाक के सिन्ध प्रांत से लेकर उत्तर पूर्व में आलमगीरपुर में हिरण्य तक मेरठ और कुरुक्षेत्र तक था। प्रारम्भिक विस्तार जो प्राप्त था उसमें सम्पूर्ण क्षेत्र त्रिभुजाकार था (उत्तर में जम्मू के माण्डा से लेकर दक्षिण में गुजरात के भोगत्रार तक और पश्चिम में अफगानिस्तान के सुत्कागेनडोर से पूर्व में उत्तर प्रदेश के मेरठ तक था और इसका क्षेत्रफल 20,00,000 वर्ग किलोमीटर था।)

तीसरा नगर मोहनजोदड़ो से 130 किमी. दक्षिण में चन्हुदड़ो स्थल पर था तो चौथा नगर गुजरात के खंभात की खाड़ी के ऊपर लोथल नामक स्थल पर। इसके अतिरिक्त राजस्थान के उत्तरी भाग में कालीबंगा (शाब्दिक अर्थ—काले रंग की चूड़ियाँ) तथा हरियाणा के हिसार जिले का बनावली। इन सभी स्थलों पर परिपक्व तथा उन्नत हड़प्पा संस्कृति के दर्शन होते हैं। सुतकागेंडोर तथा सुरकोतडा़ के समुद्रतटीय नगरों में भी इस संस्कृति की परिपक्व अवस्था दिखाई देती है। इन दोनों की विशेषता है एक-एक नगर दुर्ग का होना। उत्तर हड़प्पा अवस्था गुजरात के कठियावाड़ प्रायद्वीप में रंगपुर और रोजड़ी स्थलों पर भी पाई गई है।

1.3.2. कृषि एवं पशु-पालन

सिंधु सभ्यता की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान थी, किंतु व्यापार एव पशु-पालन भी प्रचलन में था। यहीं के निवासियों ने विश्व में सबसे पहले कपास की खेती करना शुरू किया। इसका जिक्र यूनान के लोगों ने सिन्डन कह कर किया। यहां के लोग आवश्यकता से अधिक अनाज का उत्पादन करते थे। इसके अलावा कपड़ा, जौहरी का काम, मनके और ताबीज बनाने का कार्य भी प्रचलित था जिसे विदेशों में निर्यात[3] किया जाता था।

आज के मुकाबले सिंधु प्रदेश पूर्व में बहुत उपजाऊ था। ईसा-पूर्व चौथी सदी में सिकन्दर के एक इतिहासकार ने इसे देश के उपजाऊ क्षेत्रों में गिना। पूर्व काल में प्राकृतिक वनस्पति बहुत थीं जिसके कारण यहां अच्छी वर्षा होती थी। यहां के वनों से ईंटे पकाने और इमारत बनाने के लिए लकड़ी बड़े पैमाने पर इस्तेमाल में लाई गई, जिसके कारण धीरे-धीरे वनों का विस्तार सिमटता गया। सिंधु की उर्वरता का एक कारण सिंधु नदी से प्रति वर्ष आने वाली बाढ़ भी थी। गाँव की रक्षा के लिए खड़ी पक्की ईंट की दीवार इंगित करती है कि बाढ़ हर वर्ष आती थी। यहां के लोग बाढ़ के उतर जाने के बाद नवंबर के महीने में बाढ़ वाले मैदानों में बीज बो देते थे और अगली बाढ़ के आने से पहले अप्रैल के महीने में गेहूँ और जौ की फसल काट लेते थे। यहां कोई फावड़ा या फाल तो नहीं मिला है, लेकिन कालीबंगा की प्राक्-हड़प्पा सभ्यता के जो कूँट (हलरेखा) मिले हैं उनसे आभास होता है कि राजस्थान में इस काल में हल जोते जाते थे।

सिंधु घाटी सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, राई, मटर, ज्वार आदि अनाज पैदा करते थे। वे दो किस्म की गेहूँ पैदा करते थे। बनावली में मिला जौ उन्नत किस्म का है। इसके अलावा वे तिल और सरसों भी उपजाते थे। सबसे पहले कपास भी यहीं पैदा की गई। इसी के नाम पर यूनान के लोग इसे सिन्डन (Sindon) कहने लगे। हड़प्पा एक कृषि प्रधान संस्कृति थी। हड़प्पा सभ्यता के लोगों का दूसरा व्यवसाय पशु-पालन था। ये लोग बैल-गाय, भैंस, बकरी, भेड़ और सूअर आदि पशु प्रमुखता से पालते थे। हड़प्पाई लोगों को हाथी तथा गैंडे का ज्ञान था। यह लोग दूध, मांस, उनसे कृषि के कार्य और भार ढोने के लिए इनका प्रयोग किया करते थे।

यह लोग गाय, भैंस, भेड़, बकरी, बैल, कुत्ते, बिल्ली, मोर, हाथी, सुअर तथा मुर्गियाँ पाला करते थे। इन लोगों को घोड़े और लोहे की जानकारी नहीं थी। हड़प्पा के लोग तांबा खेतडी (राजस्थान) तथा बलूचिस्तान से प्राप्त करते थे, व सोना कर्नाटक तथा अफ़गानिस्तान से प्राप्त करते थे।

1.3.3. उद्योग-धंधे

यहां के नगरों में अनेक व्यवसाय-धंधे प्रचलित थे। मिट्टी के बर्तन बनाने में ये लोग बहुत कुशल थे। मिट्टी के बर्तनों पर काले रंग से भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्र बनाए जाते थे। कपड़ा बनाने का व्यवसाय उन्नत अवस्था में था। उसका विदेशों में

भी निर्यात होता था। जौहरी का काम भी उन्नत अवस्था में था। मनके और ताबीज बनाने का कार्य भी लोकप्रिय था, लेकिन अभी तक लोहे की कोई वस्तु नहीं मिली है। अत: यह सिद्ध होता है कि इन्हें लोहे का ज्ञान नहीं था।

1.3.4. व्यापार

यहां के लोग आपस में पत्थर, धातु शल्क (हड्डी) आदि का व्यापार करते थे। एक बड़े भू-भाग में ढेर सारी सील (seal, मृन्मुद्रा, मोहर या ठप्पा), एकरूप लिपि और मानकीकृत माप-तोल के प्रमाण मिले हैं। वे चक्के से परिचित थे और संभवत: आजकल के इक्के (रथ) जैसा कोई वाहन प्रयोग करते थे। ये अफगानिस्तान और ईरान (फारस) से व्यापार करते थे। उन्होंने उत्तरी अफगानिस्तान में एक वाणिज्यिक उपनिवेश स्थापित किया जिससे उन्हें व्यापार में सहूलियत होती थी। बहुत सी हड़प्पाई सील मेसोपोटामिया में मिली हैं जिनसे लगता है कि मेसोपोटामिया से भी उनका व्यापार संबंध था। मेसोपोटामिया के अभिलेखों में मेलुहा के साथ व्यापार के प्रमाण मिले हैं साथ ही दो मध्यवर्ती व्यापार केंद्रों का भी उल्लेख मिलता है—दिलमुन और माकन। दिलमुन पर्शियन गल्फ के पास, 100 सऊदी अरेबिया के पूर्वी भाग में स्थित था। दिलमून उस क्षेत्र का बहुत बड़ा व्यापारिक संपर्क स्थल था। मेसोपोटामिया एवं सिंधु घाटी सभ्यता के बीच व्यापारिक मार्ग पर स्थित था। माकन (मकरान तट) पर स्थित शहर के द्वारा सिंध एवं बलूचिस्तान सम्भवत: मेसोपोटामिया व पश्चिम एशिया के कुछ अन्य देशों के साथ उनके व्यापारिक संबंध बने थे।

मेसोपोटामिया में संस्कृति का विकास कालक्रम की दृष्टि से सिंधु संस्कृति से पहले हुआ था। अधिकांश विद्धानों की धारणा है कि सम्भवत: सभ्यता का विचार यहीं पर सबसे पहले उद्भासित हुआ था, अत: कुछ विद्वान मेसोपोटामिया की संस्कृति को सिंधु संस्कृति का प्रेरक मानते हैं।

चित्र 1.2. मेसोपोटामिया तथा मेलुहा (सिंधु घाटी की सभ्यता) के बीच व्यापारिक संपर्क

मेसोपोटामिया का यूनानी अर्थ है 'दो नदियों के बीच'। यह इलाका दजला (टिगरिस) और फुरात (इयुफ्रेटीस) नदियों के बीच के क्षेत्र में पड़ता है। इसमें आधुनिक इराक बाबिल जिला, उत्तर-पूर्वी सीरिया, दक्षिण-पूर्वी तुर्की तथा ईरान का कुज़ेस्तान प्रांत के क्षेत्र शामिल हैं। यह कांस्ययुगीन सभ्यता का उद्गम स्थल माना जाता है। यहां सुमेर, अक्कदी सभ्यता, बेबीलोन तथा असीरिया के साम्राज्य अलग-अलग समय में स्थापित हुए थे। हड़प्पा सभ्यता को मेसोपोटामिया में 'मेलुहा' कहा गया है।

मेसोपोटामिया लगभग 10,000 ईसा पूर्व से नवपाषाण क्रांति के शुरुआती विकास का स्थल है। इसकी पहचान 'मानव इतिहास के कुछ सबसे महत्त्वपूर्ण विकासों से प्रेरित है, जिसमें पहिये का आविष्कार, पहली अनाज की फसलों का रोपण और श्राप लिपि, गणित, खगोल विज्ञान और कृषि का विकास' शामिल है। यह क्षेत्र उन चार नदी सभ्यताओं में से एक था

जहाँ लेखन का आविष्कार हुआ था, साथ ही मिस्र में नील नदी घाटी, भारतीय उपमहाद्वीप में सिंधु घाटी सभ्यता और चीन में पीली नदी थी।

सिंधु सभ्यता में नगर का नियोजन एवं सार्वजनिक स्वच्छता की व्यवस्था को मेसोपोटामिया ही नहीं वरन विश्व की समस्त प्राचीन सभ्यताओं में श्रेष्ठ पाया गया है।

1.3.5. सैंधव सभ्यता में अध्यात्म एवं धर्म

मेसोपोटामिया में मंदिर महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं, किन्तु सिंधु सभ्यता के किसी भी स्थान पर किसी ऐसे भवन के अवशेष नहीं मिले हैं जिन्हें बिना किसी संदेह के मंदिर की संज्ञा दी जा सके।

यह व्यापक रूप से सुझाव दिया गया था कि हड़प्पा के लोग प्रजनन क्षमता की प्रतीक मां देवी की पूजा करते थे। मानव और प्रतीकात्मक दोनों रूपों में शिव और शक्ति की पूजा के अलावा हड़प्पा के लोग पत्थरों, पेड़ों और जानवरों की पूजा की प्रथा का पालन करते थे क्योंकि वे उन्हें विभिन्न आत्माओं का निवास अच्छे या बुरे मानते हैं।

सिंधु घाटी धर्म बहुदेववादी था और सनातन धर्म, जैन दर्शन और बौद्ध धर्म से मिलकर बना था। सिंधु घाटी के देवताओं के साक्ष्य का समर्थन करने के लिए कई मुहरें हैं। कुछ मुहरें ऐसे जानवर दिखाती हैं जो दो देवताओं—शिव और रुद्र के समान होते हैं। अन्य चित्रों में एक वृक्ष को दर्शाया गया है। सिंधु घाटी सभ्यताओं से मिली विभिन्न मोहरों में ऋषभदेव के समान प्रतीक मिले हैं। कई अवशेष जैन प्रतीकों को दर्शाते हैं, जिनमें खड़े नग्न पुरुष आंकड़े, नागिन-सिर वाली छवियां और वृषभ देव के बैल प्रतीक शामिल हैं। जिसे सिंधु घाटी जीवन का वृक्ष मानती थी।

चित्र 1.3. स्क्वायर सील तीन चेहरों के साथ एक नग्न पुरुष देवता का चित्रण, एक सिंहासन पर योग की स्थिति में बैठे, दोनों बाहों और एक विस्तृत साफा पर चूड़ियां पहने हुए।

चित्र 1.4. पशुपति सील एक स्टेलाइट सील है जिसे सिंधु घाटी सभ्यता के मोहनजोदड़ो पुरातात्विक स्थल पर खोजा गया था। सील में एक बैठे हुए आंकड़े को दर्शाया गया है जो संभवतः ट्राइसेफेलिक (तीन सिर वाला) है।

हड़प्पा से एक लाल बलुआ पत्थर की मूर्ति मिली है जिसका केवल धड़ ही बचा है। यह मूर्ति पूर्णतया नग्न युवा पुरुष की है, जिसका स्वस्थ शरीर अत्यंत सजीव और स्वाभाविक रूप से गठित है। इस मूर्ति के गले और दोनों कंधों में छेद है जिससे लगता है कि सिर और भुजाएं अलग से बनाकर जोड़े गए थे—जो नष्ट हो गए होंगे। इस नग्न मूर्ति की तुलना कुछ जैन विद्वान जैन तीर्थकरों की कायोत्सर्ग मुद्रा के प्राचीन रूप से करते हैं। कायोत्सर्ग एक योगी ध्यान की मुद्रा का नाम है।

चित्र 1.5. कायोत्सर्ग मुद्रा में भगवान बाहुबली की प्रतिमा

अधिकांश जैन तीर्थकरों को कायोत्सर्ग या पद्मासन मुद्रा में ही दर्शाया जाता है। कायोत्सर्ग का शाब्दिक अर्थ शरीर के ममत्व का त्याग (काया का त्याग) है, और ये ध्यान की शारीरिक अवस्था समाधि का पर्यायवाची है। जैन धर्म के अनुसार दोनों पैरों में चार अंगुल का अंतराल देखकर खड़े हों (दोनों एक सीध में हो, आगे पीछे नहीं), दोनों भुजाएँ नीचे को लटकती रहे तथा समस्त शारीरिक अंगों को निश्चल करके यथानियम सांस लेने (प्राणायम) पर कायोत्सर्ग होता है।

जैन तीर्थकरों मूर्तियों में आवश्यक रूप से किसी ना किसी पशु का चिन्ह अवश्य होता है।

हड़प्पाई संस्कृति वाले क्षेत्र में बहुतायत से जैन मूर्तियों का मिलना इस बात का प्रमाण है की हड़प्पा वासी इस प्रकार की संस्कृति में विश्वास रखते थे।

हड़प्पा की मुहरों का मेसोपोटामिया में पाया जाना तथा मेसोपोटामिया की मोहरों का हड़प्पा में ना पाया जाना इस बात का प्रतीक है ये हड़प्पा वासी अन्य सभ्यताओं से दूरी बनाएं रखते थे। ये लगभग वैसा ही विचार है जैसा की वर्तमान में जैन लोग अपने खानपान तथा स्वच्छता संबंधी की आदतों में बरतते हैं।

हड़प्पाई लोग स्वास्तिक का चिन्ह भी प्रयोग करते थे। अनेक मृदभांडों मोहरों आदि पर स्वास्तिक का चिन्ह मिलता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि जैन धर्म, सनातन धर्म एवं बौद्ध धर्म में स्वास्तिक को एक पवित्र प्रतीक माना जाता है जिसका प्रयोग धार्मिक एवं आवासीय स्थलों पर किया जाता है। यहां ये जान लेना उचित होगा कि किसी भी हड़प्पाकालीन स्थलों पर मंदिरों का साक्ष्य नहीं मिला है। परन्तु हड़प्पा वासी वृक्ष, पशु (सिंह एवं हाथी को छोड़कर) और मानव स्वरूप विचित्र आकृति वाले देवताओं की उपासना करते थे।

नए शोध में सिन्धु घाटी सभ्यता से भगवान शिव और नाग के प्रमाण मिले हैं उस आधार पर कहा गया है कि यह सभ्यता निषाद जाति भील से संबंधित रही होगी।

चित्र 1.6. हड़प्पा से प्राप्त कांस्य की धातु से बना रथ

1.3.6. हड़प्पा का पतन एवं विनाश

हड़प्पा सबसे पहला खोजा गया स्थल था, पर इसे ईंट चुराने वालों ने बुरी तरह से नष्ट कर दिया था। सन् 1875 में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के पहले जनरल अलेक्जेंडर कनिंघम, जिन्हें भारतीय पुरातत्व का जनक कहा जाता है, ने लिखा है कि प्राचीन स्थल से ले जाई गई ईंटों की मात्रा लगभग 160 किलोमीटर (100 मील) थी। ईंटों की इतनी मात्रा लाहौर से मुल्तान के बीच बिछाने के लिए पर्याप्त थी। हड़प्पा शहर का अधिकांश भाग रेलवे लाइन निर्माण के कारण नष्ट हो गया था।

कई विद्वानों का मानना है कि सिंधु घाटी सभ्यता का पतन जलवायु परिवर्तन के कारण हुआ है। मानसून के पूर्व की ओर स्थानांतरित होने से पानी की आपूर्ति कम हो गई होगी, जिससे सिंधु नदी घाटी के हड़प्पावासियों को पलायन करने और छोटे गाँवों और इक्का-दुक्का खेतों की स्थापना करने के लिए बाध्य होना पड़ा होगा।

जाहिर है सिंधु सभ्यता की संभावना ईरान, आर्यों से भारत-यूरोपीय प्रवासियों द्वारा नष्ट कर दिया गया था। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा शहरों में आग से पकी ईंटों का निर्माण किया गया था। सदियों से ईंट बनाने के लिए लकड़ी की आवश्यकता ने देश की ओर खंडित (Denuded) और यह पतन के लिए योगदान दिया हो सकता है।

1.3.7. हड़प्पा संस्कृति की विशेषताएँ

हड़प्पा संस्कृति की निम्नलिखित विशेषताएँ थी:

1. **नगर निर्माण**—नगर योजना, भवन निर्माण, सार्वजनिक भवन, विशाल स्नानागार, अन्न भण्डार
2. **सामाजिक जीवन**—भोजन, वस्त्र, आभूषण एवं सौंदर्य प्रसाधन, मनोरंजन, प्रौद्योगिकी ज्ञान
3. **आर्थिक जीवन**—कृषि, पशु-पालन, व्यापार, कुटीर उद्योग माप-तोल, बाट
4. **कला का विकास**—मूर्तिकला/प्रतिमाएँ, चित्रकला, मुद्रा कला, धातु कला
5. मंदिर एवं अन्य पूजा स्थलों का अभाव

1.3.8. हड़प्पा के अतिरिक्त उत्खनित अन्य स्थल

आजादी पूर्व भारत के विभिन्न राज्यों में सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान हुए उत्खनन के पश्चात निम्नलिखित प्रमुख स्थल प्रकाश में आए हैं:

1. गुजरात: लोथल, सुरकोटडा (कच्छ), रंगपुर, रोजी, मालवद, देसूल, धोलावीरा, प्रभातपट्टन, भगतराव
2. हरियाणा: राखीगढ़ी, भिरड़ाणा, कुणाल, मीताथल
3. पंजाब: रोपड़ (पंजाब), बाड़ा, संघोल (जिला फतेहगढ़, पंजाब)
4. महाराष्ट्र: दायमाबाद, बनावली (जिला फतेहबाद), कुणाल, मीताथल, महाराष्ट्राबाद
5. राजस्थान: कालीबंगा
6. जम्मू कश्मीर: मांडा
7. आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में)
8. हड़प्पा (पंजाब पाकिस्तान)
9. मोहेनजोदड़ो (सिंध पाकिस्तान लरकाना जिला)
10. चन्हूदड़ो (पाकिस्तान)
11. सूत कांगे डोर (पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में)
12. कोट दीजी (सिंध पाकिस्तान)
13. मेहरगढ़

1.4. द्वितीय चरण: प्रारंभिक एवं उत्तर वैदिक काल: 1500 ईसा पूर्व से लेकर 500 ईसा पूर्व

सिंधु घाटी सभ्यता के पश्चात भारत में जिस नवीन सभ्यता का विकास हुआ उसे ही आर्य (Aryan) अथवा वैदिक सभ्यता (Vedic Civilization) के नाम से जाना जाता है। शहरी सिंधु घाटी सभ्यता के अंत और उत्तरी मध्य-गंगा में शुरू होने वाले एक-दूसरे शहरीकरण के बीच 3,500 वर्ष पहले, लौह युग में वैदिक संस्कृति का अभ्युदय हुआ।

इस काल की जानकारी हमें मुख्यत: वेदों से प्राप्त होती है, जिसमें ऋग्वेद सर्वप्राचीन होने के कारण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। वैदिक काल को ऋग्वैदिक या पूर्व वैदिक काल तथा उत्तर वैदिक काल में बांटा गया है। प्रारंभिक वैदिक काल: 1500 ईसा पूर्व से लेकर 1000 ईसा पूर्व एवं उत्तर वैदिक काल: 1000 ईसा पूर्व से लेकर 500 ईसा पूर्व तक गिना जाता है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान सार

पुस्तक के विषय में

प्रस्तुत पुस्तक ''प्राचीन भारतीय ज्ञान सार'' में भारतीय परंपराओं पर आधारित चार वेदों तथा उपवेदों, छह उपांग एवं 18 पुराणों की व्याख्या की गई है। इस पुस्तक में विभिन्न स्थानों पर संस्कृत के श्लोकों का प्रयोग तथा उनका भावार्थ हिन्दी में दिया गया है। इस पुस्तक में निम्नलिखित विषय शामिल किए गए हैं:

- प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराएँ
- ऋग्वेद
- यजुर्वेद
- सामवेद
- अथर्ववेद
- उत्तर वैदिक काल
- उपवेद एवं आयुर्वेद
- धनुर्वेद
- गंधर्व वेद
- भारतीय स्थापत्य कला
- षष्ठ वेदांग
- उपांग तथा धर्म शास्त्र
- धर्मशास्त्र एवं स्मृतियाँ
- मीमांसा
- पुराण
- तर्कशास्त्र

लेखक के विषय में

श्री वीरेन्द्र कुमार जैन ने वर्ष 1966 में मौलाना आजाद कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी (एमएसीटी), भोपाल से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त की। तत्पश्चात वर्ष 1966–68 में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से यूनेस्को के प्रयोजन के तहत संचालित एक उद्योग उन्मुख पाठ्यक्रम, भारी विद्युत उपकरणों के डिजाइन और उत्पादन में एमएसीटी और एचईएल (अब भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स), भोपाल से एम.टेक किया। वह भेल (BHEL) के इलेक्ट्रॉनिक्स एप्लीकेशन इंजीनियरिंग विभाग से जुड़े रहे। तत्पश्चात वह सीपीडब्ल्यूडी में इलेक्ट्रिकल इंजीनियर के रूप में शामिल हुए और निरंतर 35 वर्षों तक सीपीडब्ल्यूडी की सेवा की। इस दौरान श्री वी. के. जैन ने बम्बई, नागपुर, होशंगाबाद, भोपाल, इंदौर, नई दिल्ली, अमृतसर आदि स्थानों पर सीपीडब्ल्यूडी में कार्य करते हुए विभिन्न प्रकार के भवनों के लिए इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल और डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक सेवाओं के डिजाइन में अपना सहयोग प्रदान किया।

इसके अतिरिक्त श्री जैन ने वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज, सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली की निर्माण परियोजना के लिए परियोजना समन्वयक के रूप में कार्य किया। उन्होंने दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली में स्थित दिल्ली के कृत्रिम बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण सीएजी (CAG) भवन के इलेक्ट्रिकल/इलेक्ट्रॉनिक और बीएमएस सेवाओं को डिजाइन किया।

KHANNA PUBLISHERS®
ISO 9001:2015
B-35/9, G.T. Karnal Road Industrial Area, Delhi-110033
Phones: 011-23243042, 011-45033819, 9811541460
E-mail: contactus@khannapublishers.in
Website: www.khannapublishers.in

ISBN 9392549164-4
9789392549168